जाग उठा हमारा
आजाद हिन्दुस्तान
सच के साथ.....

RNI No.-MPHIN/2001/14172

AZAD हिन्दुस्तान LIVE

वर्ष-23 अंक- 48-49 इन्दौर/खरगोन/बड़वाह 28 नवम्बर 2023 सम्पादक : नवरत्नमल जैन Email.azadindore@gmail.com पेज-4 वार्षिक मूल्य- 150 रु.

अब बेसब्री से इंतजार चुनाव परिणाम का

गुर्जर वोट एवं बड़वाह-काटकूट क्षेत्र के समर्थन पर टिकी है नरेन्द्र पटेल एवं सचिन बिरला की जीत

दोनो जीत के प्रति आश्वस्त लेकिन भीतरघात का डर भी कर रहा है बैचेन

बड़वाह -नवरत्नमल जैन

विधान सभा चुनाव के बाद अब भाजपा एवं कांग्रेस दोनों ही दलों के प्रत्याशियों को बेसब्री से इंतजार है 3 दिसम्बर के दिन का। जब मतगणना के बाद यह तय होगा कि प्रदेश में किसकी बनेगी सरकार एवं बड़वाह में कौन बनेगा आने वाले पांच साल के लिये विधायक। वैसे तो दोनों दलों की खास नजर पूरे खरगोन जिले पर है जहां पिछले चुनाव में भाजपा का सूपडा साफ होगया था और 6 मे से पांच सीट कांग्रेस एवं 1 सीट कांग्रेस के बागी के खाते में गई थी। लेकिन इस बार भाजपा ने खरगोन जिले में पूरी ताकत लगाई है। प्रधानमंत्री श्री मोदी, राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री जेपीनड्डा के साथ ही भाजपा के अनेक रणनीतिकारों एवं राष्ट्रीय स्वयं सेवक संघ ने भी सक्रीय रूप से भाजपा को जिताने के लिये जी तोड मेहनत की है वहीं कांग्रेस की ओर से इस बार खरगोन जिले में नामांकन रेली मे आये प्रदेश प्रभारी की रेली के अलावा किसी बडे राष्ट्रीय नेता की सभा नही करवाई गई बल्कि उनका मुख्य लक्ष डोर टू डोर जनसम्पर्क पर ज्यादा रहा। दोनों दलों की मेहनत का ही प्रतिफल है कि खरगोन जिले में इस बार रिकार्ड 80 प्रतिशत मतदान हुआ। ज्यादा मतदान को जहां कांग्रेस भाजपा के खिलाफ लोगों के गुस्से का इजहार एवं परिवर्तन की लहर बता रही है वहीं भाजपा इसे अपने पक्ष में लाडली बहना योजना की सफलता तथा भाजपा सरकार द्वारा जनहित की अनेक योजनाओं के पक्ष में लोगों का समर्थन बता रही है। अब देखना होगा कि यह भारी मतदान भाजपा को पुनःजीत दिलाता है है या 20 सालों के शासन के बाद उसका प्रदेश में तख्ता पलट करता है। कांग्रेस के लिये भी स्थिति करो या मरों की है। वोट के पहले सभी सर्वे कांग्रेस के पक्ष में होने के बाद कमलनाथ की गारंटियों पर प्रदेश का मतदाता कितना भरोसा करता है यह भी आने वाली 3 दिसम्बर को ही पता चल सकेगा।

बड़वाह में सचिन बिरला की जीत का बजेगा डंका या नरेन्द्र पटेल के सिर पर सजेगा जीत का ताज

बड़वाह विधानसभा में इस बार बडा ही रौचक मुकाबला है। क्यों कि पिछली बार कांग्रेस के टिकिट पर भाजपा के १५ वर्ष की एक क्षत्र जीत को रिकार्ड को ध्वस्त कर अब तक की सबसे बडी रिकार्ड जीत अर्जित करने वाले सचिन बिरला पाला बदल कर भाजपा के टिकिट पर चुनाव लड़ रहे है वहीं कांग्रेस की ओर से पूर्व सासंद श्री ताराचंद पटेल के भतीजे एवं प्रदेश कांग्रेस के महासचिव श्री नरेन्द्र पटेल अपने ही पुराने साथी सचिन बिरला के खिलाफ चुनावी मैदान में आमने- सामने रहे। बड़वाह में चुनाव लड रहे दोनो ही प्रत्याशियों के लिये ३ दिसम्बर को आने वाला चुनाव परिणाम भावी राजनैतिक जीवन के लिये जीवन एवं मरण जैसा होगा।

सचिन को भाजपा में शामिल करना एवं टिकिट देकर चुनाव लडाना भाजपा की खास रणनीति -

श्री सचिन बिरला को भाजपा में शामिल करने एवं क्षेत्र के स्थापित नेताओं के लाख अन्दरूनी विरोध के बावजूद श्री सचिन बिरला को भाजपा द्वारा उम्मीदवार बनाये जाना सौची समझी एवं दूर तक प्रभावशाली रणनीति का हिस्सा है। बड़वाह विधानसभा के साथ ही खंडवा लोकसभा क्षेत्र में गुर्जर समाज की सख्यां भारी मात्रा में है। और कांग्रेस द्वारा बड़वाह विधानसभा क्षेत्र में लगातार गुर्जर समाज को टिकिट देकर विधानसभा एवं लोकसभा क्षेत्र में गुर्जर समाज के लगभग ९० प्रतिशत वोट अपने पाले में रखने में सफल रही है। आने वाले २०२४ के लोकसभा चुनाव की रणनीति को घ्यान में रखकर भाजपा की रणनीति यह रही कि इस बार एकमुश्त कांग्रेस समर्थक गुर्जर समाज को कांग्रेस एवं भाजपा में बांट दिया जाये जिससे बड़वाह में सचिन बिरला तथा मांधाता में नारायण पटेल की जीत के साथ ही २०२४ में लोकसभा चुनाव भी आसानी से जीता जा सके। भाजपा की यह रणनीति कितनी कारगर रही है यह तो ३ दिसम्बर के चुनाव परिणाम बतायेगें लेकिन यह तय है कि भाजपा की इस रणनीति से कांग्रेस के गुर्जर समाज के वोट बैंक में सेंध जरूर लगी है। दोनो ही उम्मीदवार एक ही समाज के होने से वोटों का कुछ ना कुछ बटवारा होना तय है। यदि भाजपा की यह रणनीति उनकी आशा के अनुरूप कारगर रहती है और भाजपा गुर्जर समाज के वोटों में भारी संख्या अपने पक्ष में लाने में सफल रहती है तो सचिन बिरला पुनः अपनी जीत को दोहरा सकते है।

कांग्रेस की जीत का आधार गुर्जर, राजपूत एवं मुस्लिम समाज के साथ ही भाजपा विरोधी वोटों पर...

कांग्रेस को भी इस बार जीत का पूरा भरोसा है। गुर्जर समाज को बांटने की भाजपा की रणनीति को कांग्रेस जहां विफल बताते हुये कहती है कि गुर्जर समाज का अधिकांश समर्थन तो कांग्रेस को मिलेगा ही साथ ही साथ राजपूत समाज को पूरे निमाड़ क्षेत्र में एक भी सीट नही देना भाजपा के लिये महंगा साबित हो सकता है। बडवाह विधानसभा क्षेत्र में राजपूत समाज की नाराजगी भाजपा को वोटों में झेलनी पड सकती है। यदि राजपूत समाज ने एक मुश्त वोट कांग्रेस के पक्ष मे किया और गुर्जर समाज के वोटों को बडा बटवारा नही हुआ तो कांग्रेस की जीत आसान हो सकती है। कांग्रेस की जीत का समीकरण भी गुर्जर,राजपूत एवं मुस्लिम समाज के साथ सत्ता विरोधह लहर के इर्द गिई घूम रहा है। यदि कांग्रेस चुनाव के अन्तिम दिनों में इस समीकरण को पूरी तरह सांधने में सफल होगई तो चुनाव में उसकी जीत आसान हो जायेगी।

भाजपा की जीत का आधार- गुर्जर वोट का बटवारा, लाडली बहना योजना से महिलाओं के एक मुश्त वोट एवं बड़वाह काटकूट क्षेत्र में उसका स्थापित जनाधार

जैसे कांग्रेस गुर्जर समाज, राजपूत समाज एवं मुस्लिम समाज के समीकरण को लेकर जीत के प्रति पूरी तरह आश्वस्त है उसी तरह भाजपा भी पहली बार अपने पक्ष में गुर्जर समाज की भारी वोटिंग, लाडली बहना योजना का लाभ मिलने से महिलाओं के एक मुश्त वोट तथा बडवाह एवं काटकूट क्षेत्र में भाजपा की मजबूत स्थिति से अपनी जीत के प्रति पूरी तरह आशान्वित है।

भाजपा प्रत्याशी सचिन बिरला का कहना है कि मै अपनी जीत के प्रति शत प्रतिशत आश्वस्त हूं। ३ सिम्बर को जीत का रिकार्ड वापस बनेगा। जिस तरह हमारे समाज जनों ,लाडली बहनाओं एवं भाजपा की जनकल्याणकारी योजनाओं से प्रभावित हितग्राहियों ने भारी संख्या में भाजपा के पक्ष में वोट किया है उससे भाजपा भारी मार्जिन के साथ इस चुनाव में जीत अर्जित करेगी।

उन्होने कहा कि हम न केवल बड़वाह काटकूट क्षेत्र में भारी बढत लेगें बल्कि पहली बार भाजपा सनावद, बेडिया, ढकलगांव सहित चौतरफा बढत हांसिल कर जीत का रिकार्ड बनायेगी। अब देखना यही है कि कांग्रेस एवं भाजपा के समीकरणों में कोनसा समीकरण सटिक बेठता है और जीत का सेहरा अपने सिर पर बांधने मे सफल होता है।

कांग्रेस के लिये सनावद ग्रामीण बेडिया एवं ढकलगांव की बढत तथा भाजपा के लिये सनावद, बड़वाह एवं काटकूट क्षेत्र का समर्थन बनेगा जीत का आधार

यदि बड़वाह विधानसभा क्षेत्र में अब तक के चुनावी सफर पर नजर घूमाई जाये तो नर्मदा के उस पार कांग्रेस एवं नर्मदा के इस पार भाजपा का पलडा भारी रहा है।

सनावद के ग्रामीण क्षेत्र के साथ ही बेडिया, ढकलगांव सहित पूरे क्षेत्र से कांग्रेस को भारी बढत मिलती रही है लेकिन सनावद शहर, बड़वाह शहर एवं काटकूट क्षेत्र में भाजपा का प्रभाव चट्टान की तरह अडिग रहा है। इस क्षेत्र में भाजपा को मिलने वाली बढत कांग्रेस की दसपार से मिलने वाली बढत को बेअसर करती आई है। केवल पिछला चुनाव अपवाद रहा जब बड़वाह एवं काटकूट क्षेत्र से कांग्रेस को भारी बढत मिली और कांग्रेस के सचिन बिरला रिकार्ड बहुमत से जीत पाये।

इस बार दोनो दलों की हार-जीत नदी के इस पार एवं उसपार के समर्थन पर ही निर्भर होगी। यदि कांग्रेस उस पार से अच्छी लीड ले और बड़वाह, सनावद शहर एवं काटकूट क्षेत्र में कांग्रेस भाजपा की बढत को रोकने या कम करने में सफल रही तो उसके लिये जीत आसान होगी। वहीं भाजपा ने बड़वाह काटकूट एवं सनावद शहर में रिकार्ड बढत कायम करने के साथ ही कांग्रेस को परम्परागत रूप से मिलने वाली बढत को रोकने में सफलता पाई तो भाजपा के लिये जीत की राह आसान होती नजर आयेगी।

भीतरधात का खतरा भी है बरकरार-

बड़वाह विधानसभा सीट पर भाजपा एवं कांग्रेस दोनों में भीतरधात का खतरा भी बरकरार है। भाजपा एवं कांग्रेस के दोनो ही उम्मीदवार एक ही समाज एवं कांग्रेस की पृष्टभूमि से रहने के चलते दोनो ही दलों में भीतरघात की संभावना से इंकार नही किया जा सकता। भाजपा में टिकिट के अनेक स्थापित दावेदारों के बावजूद कांग्रेस से आये सचिन बिरला को टिकिट देने के कारण भाजपा में कही न कही नाराजगी देखने में नजर आरही थी। ऐसे में उनकी नाराजगी वोटिंग के समय बगावत की सीमा तक कितना पहूंची उसपर भीतरघात का असर देखने को मिलेगा। लेकिन यह भी देखने में आया है कि भाजपा के समर्थक अपनी नाराजगी कितनी भी सार्वजनिक रूप से दिखाले लेकिन जब वोट की बात आती है तो उनका हाथ कमल निशान पर ही जाता है। लेकिन पिछली बार के चुनाव में यह मिथक टूटा तो सचिन को रिकार्ड जीत भी मिली। लेकिन इस बार भाजपा की अन्दरूनी राजनीति किस करवट बेठती है यह ३ दिसम्बर को पता चलेगा। वहीं कांग्रेस में भीतरघात का खतरा टिकिट मांग रहे उम्मीदवारों के बीच से नही बल्कि जमीनी कार्यकताओं से हो सकता है। सचिन बिरला काफी लम्बे समय युवक कांग्रेस से लेकर विधायक बनने तक कांग्रेस के एक एक कार्यकर्ता से जुडे रहे। यह जुडाव पार्टीगत अब भले ही नही रहा हो लेकिन व्यक्तिगत अभी भी खुले रूप से नजर आता रहा है। ऐसे में सचिन बिरला कांग्रेस के अपने परिचित कार्यकर्ताओं को अपने पक्ष में लेने में सफल रहे इस पर भीतरघात का असर दिखाई देगा।

कांग्रेस एवं नरेन्द्र पटेल के लिये सबसे महत्वपूर्ण रहा उनकी बहन आरती पटेल का सच्चाा साथ। श्रीमति आरती पटेल ने अपने भाई नरेन्द्र पटेल के लिये एक उम्मीदवार की तरह घर-घर जाकर प्रचार किया। इसका लाभ श्री नरेन्द्र पटेल को किसी न किसी रूप में जरूर मिलेगा